

NCERT Solution

पाठ - 06

महादेवी वर्मा

प्रश्न अभ्यास:

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

1. प्रस्तुत कविता में 'दीपक' और 'प्रियतम' किसके प्रतीक हैं?
2. दीपक से किस बात का आग्रह किया जा रहा है और क्यों?
3. 'विश्व-शलभ' दीपक के साथ क्यों जल जाना चाहता है?
4. आपकी दृष्टि में 'मधुर मधुर मेरे दीपक जल' कविता का सौंदर्य इनमें से किस पर निर्भर है -

(क) शब्दों की आवृत्ति पर।

(ख) सफल बिंब अंकन पर।

5. कवयित्री किसका पथ आलोकित करना चाह रही हैं?
6. कवयित्री को आकाश के तारे स्नेहहीन से क्यों प्रतीत हो रहे हैं?
7. पतंगा अपने क्षोभ को किस प्रकार व्यक्त कर रहा है?
8. कवयित्री ने दीपक को हर बार अलग-अलग तरह से 'मधुर-मधुर, पुलक-पुलक, सिहर-सिहर और विहँस-विहँस' जलने को क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए।

9. नीचे दी गई काव्य-पंक्तियों को पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

जलते नभ में देख असंख्यक,
स्नेहहीन नित कितने दीपक;
जलमय सागर का उर जलता,
विद्युत ले घिरता है बादल!
विहँस विहँस मेरे दीपक जल!

(क) 'स्नेहहीन दीपक' से क्या तात्पर्य है?

(ख) सागर को 'जलमय' कहने का क्या अभिप्राय है और उसका हृदय क्यों जलता है?

(ग) बादलों की क्या विशेषता बताई गई है?

(घ) कवयित्री दीपक को 'विहँस विहँस' जलने के लिए क्यों कह रही हैं?

10. क्या मीराबाई और आधुनिक मीरा 'महादेवी वर्मा' इन दोनों ने अपने-अपने आराध्य देव से मिलने के लिए जो युक्तियाँ अपनाई हैं, उनमें आपको कुछ समानता या अंतर प्रतीत होता है? अपने विचार प्रकट कीजिए?

(ख) निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए -

NCERT Solution

1. दे प्रकाश का सिंधु अपरिमित,
तेरे जीवन का अणु गल गल!
2. युग-युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल,
प्रियतम का पथ आलोकित कर!
3. मृदुल मोम सा घुल रे मृदु तन!

भाषा अध्ययन:

1. इस कविता में जब एक शब्द बार-बार आता है और वह योजक चिन्ह द्वारा जुड़ा होता है, तो वहाँ पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार होता है; जैसे - पुलक-पुलक। इसी प्रकार के कुछ और शब्द खोजिए जिनमें यह अलंकार हो।

NCERT Solution

पाठ - 06

महादेवी वर्मा

प्रश्न अभ्यास:

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

उत्तर1: प्रस्तुत कविता में दीपक आस्था का और प्रियतम कवयित्री के आराध्य देव का प्रतीक है।

उत्तर2: महादेवी वर्मा ने दीपक से हर अच्छी-बुरी परिस्थिति में वह निरंतर जलते रहने का आग्रह किया है। वह आग्रह इसलिए करती हैं क्योंकि वे अपने जीवन में ईश्वर का स्थान सबसे बड़ा मानती हैं। ईश्वर को पाना ही उनका लक्ष्य है। ईश्वर को पाने के लिए ज्ञान, स्नेह और आस्था रूपी दीपक का लगातार जलते रहना अति आवश्यक है।

उत्तर3: विश्व-शलभ अर्थात् जिस प्रकार पतंगा दीये के प्रति प्रेम के कारण उसकी लौ में जल कर अपना जीवन समाप्त कर देता है, इसी प्रकार संसार के लोग भी अपने अहंकार, मोह, लोभ, तथा विषय-विकारों को समाप्त करके आस्था रूपी दीये की लौ के समक्ष अपना समर्पण करना चाहते हैं ताकि प्रभु को पा सके।

उत्तर4: इस कविता की सुंदरता दोनों पर निर्भर है। पुनरुक्ति रूप में शब्द का प्रयोग है - मधुर-मधुर, युग-युग, सिहर-सिहर, विह्वल-विह्वल आदि कविता को लयबद्ध बनाते हुए प्रभावी बनाने में सक्षम हैं। दूसरी ओर बिंब योजना भी सफल है। यह सर्वस्व समर्पण की भावना की ओर संकेत कर रहा है। आराध्य के प्रति प्रेम को प्रदर्शित कर रहा है।

उत्तर5: कवयित्री अपने मन के आस्था रूपी दीपक से अपने परमात्मा रूपी प्रियतम का पथ आलोकित करना चाहती हैं।

उत्तर6: कवयित्री को आकाश के तारे स्नेहहीन नज़र आते हैं। क्योंकि इनमें कोई भाव नहीं है, यह यंत्रवत होकर अपना कर्तव्य निभाते हैं। प्रेम और परोपकार की भावना समाप्त हो गई है। इसलिए उसे आकाश के तारे स्नेहहीन लगते हैं।

उत्तर7: जिस प्रकार पतंगा दीये की लौ में अपना सब कुछ समाप्त करना चाहता है पर कर नहीं पाता, उसी तरह मनुष्य भी परमात्मा रूपी लौ में जलकर अपना अस्तित्व विलीन करना चाहता है परन्तु अपने अहंकार को नहीं छोड़ पाता। इसलिए पछतावा करता है।

NCERT Solution

उत्तर8: कवयित्री अपने आत्मदीपक को तरह-तरह से जलने के लिए कहती हैं मीठी, प्रेममयी, खुशी के साथ, काँपते हुए, उत्साह और प्रसन्नता से। कवयित्री ने दीपक को हर परिस्थिति का सामना करते हुए, अपने अस्तित्व को मिटाकर ज्ञान रूपी अंधकार को दूर करके आलोक फैलाने के लिए हर बार अलग-अलग तरह से जलने को कहा है।

उत्तर9: (क) स्नेहहीन दीपक से तात्पर्य प्रभु भक्ति से शून्य व्यक्ति से है। उसमें कोई भाव नहीं होता है, वह यंत्रवत होकर अपना कर्तव्य निभाता है।

(ख) कवयित्री ने सागर को संसार कहा है और जलमय का अर्थ है सांसारिकता से भरपूर संसार। सागर को जलमय कहने का तात्पर्य है कि वह सदा जल से भरा रहता "। सागर में अथाह पानी है परन्तु किसी के उपयोग में नहीं आता। इसी तरह बिना ईश्वर भक्ति के व्यक्ति बेकार है। बादल में परोपकार की भावना होती है। वे वर्षा करके संसार को हराभरा बनाते हैं तथा बिजली की चमक से संसार को आलोकित करते हैं, जिसे देखकर सागर का हृदय जलता है।

(ग) बादल स्वभाव से परोपकारी होते हैं। बादलों में जल भरा रहता " और वे वर्षा करके संसार को हराभरा बनाते हैं। बिजली की चमक से संसार को आलोकित करते हैं।

(घ) कवयित्री दीपक को उत्साह से तथा प्रसन्नता से जलने के लिए कहती " क्योंकि वे अपने आस्था रूपी दीपक की लौ से सभी के मन में आस्था जगाना चाहती हैं। उसे जलाना तो हर हाल में है ही इसलिए विझ-विझ कर जलते हुए दूसरों को भी सुख पहुँचाया जा सकता है।

उत्तर10: 1) महादेवी अपने आराध्य को निर्गुण मानती हैं और मीरा उनकी सगुण उपासक हैं। महादेवी वर्मा ने ईश्वर को निराकार ब्रह्म माना है। वे उसे प्रियतम मानती हैं। सर्वस्व समर्पण की चाह भी की है लेकिन उसके स्वरूप की चर्चा नहीं की।

2) मीराबाई श्री कृष्ण को आराध्य, प्रियतम मानती हैं और उनकी सेविका बनकर रहना चाहती हैं। उनके स्वरूप और सौंदर्य की रचना भी की है।

3) मीराबाई ने सहज एवं सरल भावों को जनभाषा के माध्यम से प्रस्तुत किया है जबकि महादेवी ने विभिन्न प्रकार के बिंबों का प्रयोग किया है।

NCERT Solution

(ख) निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए -

उत्तर1: कवयित्री अपने आस्था के दीपक से कहती है कि तू जल-जलकर अपने जीवन के एक-एक कण को गला दे और उस प्रकाश को सागर की भाँति विस्तृत रूप में फैला दे ताकि सूखे लोग भी उसका लाभ उठा सकें ।

उत्तर2: इन पंक्तियों में कवयित्री का यह भाव है कि आस्था रूपी दीपक प्रतिदिन, प्रतिपल जलता रहे। युगों-युगों तक प्रकाश फैलाता रहे। अपने मन में व्याप्त अंधकार को नष्टकरता हुआ रहे और प्रियतम रूपी ईश्वर का मार्ग प्रकाशित करता रहे अर्थात् ईश्वर में आस्था बनी रहे।

उत्तर3: कवयित्री का मानना है कि इस कोमल तन को मोम की भाँति घुलना होगा तभी तो प्रियतम तक पहुँचना संभव हो पाएगा। अर्थात् ईश्वर की प्राप्ति के लिए कठिन साधना की आवश्यकता है। हमें प्रभु के चरणों में अपना सर्वस्व समर्पित करना होगा।

भाषा अध्ययन:

उत्तर1: इसी प्रकार के अन्य शब्द हैं -

- मधुर-मधुर
- युग-युग
- सिहर-सिहर
- विहँस-विहँस